

तुझे पुकारा है

जब भी मैंने आँखे बंद कीं और तुझे पुकारा है
मैं यकी मैं बह गया की दुनिया तेरा इशारा है !!

जब होता हूँ मैं तेरे पास तेरे करीब
दुनिया में यही लगता है जैसे जन्नत का नज़ारा है !!

मैं कमजोर हूँ बेबस हूँ बहुत मालिक मेरे
तेरी रहमत का तेलबगार हूँ बस तेरा सहारा है !!

फिर मिले या न मिले

तेरे साथ के यह दो क़दम समेट लूँ तो फिर चलूँ
ज़िन्दगी से फिर मुझे यह मोहलत मिले या न मिले !!

ख्वाब सा यह साथ तेरा समेट लूँ तो फिर चलूँ
ज़िन्दगी में फिर मुझे यह ग़फ़लत मिले या न मिले !!

सीने में बेचैनी सी है समेट लूँ तो फिर चलूँ
ज़िन्दगी में फिर मुझे यह वहशत मिले या न मिले !!

फिर मिलने का वहम समेट लूँ तो फिर चलूँ
ज़िन्दगी में फिर मुझे यह फुरसत मिले या न मिले !!

यह बेरुखी सी बेवजह समेट लूँ तो फिर चलूँ
ज़िन्दगी में फिर मुझे कोई हसरत मिले या न मिले !!

ताबीर-ए-ज़िन्दगी

लोट आई है घूम-फिर के फिर ज़िन्दगी
उसी राह पे जिसे था कभी फिर छोड़ा हमने !!

की थी रो रो के तमन्ना रोशनी की कभी
आज है हँसकर अँधेरो से दिल लगाया हमने !!

उस ताबीर-ए-ज़िन्दगी का मकसद क्या है
ख़्वाब देखने की सलाहियत को जहाँ खोया हमने !!

हम भी वही हैं ,दिल भी वही है, ए दोस्त
बस धड़कन मे वह जोश ही न पाया हमने !!

उन्होंने बढ़ -बढ़ के कीं अदा की तारीफें
ग़म छुपाने को जब भी मुस्कराया हमने !!

मोहब्बत का सफ़र

नाज था हमको बहुत अपने अश्रुओं पर मगर
आपके दिल पर पड़े तो हो गए वह बेअसर !!

आप तो रुक गए अचानक नफ़रतों के मोड़ पर
पूरा करते रहे अकेले हम मोहब्बत का सफ़र !!

न मिन्नतें कुछ कर सकीं, न हुई इल्तजाएँ कारगर
प्यार की एक बूंद को ढूँढा रेतीली राह पर !!

चाहा बहुत रह न जाय , अपनी वफ़ाओं में कसर
क्या करे राह देखते पथरा गई अब तो नज़र !!

जाँकनी

झेली है जिन्दगी में एक बार हमने जाँकनी
जनाज़ा वफा का जब था गुजरा सरेबाज़ार से !!

बीच भँवर में डूब कर जो न पा सके थे हम
वो पाया है करके दोस्ती लहर से, मझधार से !!

पानी कब का बह चुका है नयनो के द्वार से
हैं आग सी निकल रही गिरते आबशार से !!

न होता कोई एतराज तो हम ही दे लेते आवाज़
लेकिन उन्हें तो बैर था हमारी आवाज़ से पुकार से !!

मिला न कोई ग़म तो क्या ग़म है 'सबा'
देखा था तुमने खुद ही सफ़ेद फूलों को प्यार से !!

दौर-ए-सफ़र

जिनकी गर्द समेटी हर दौर-ए-सफ़र में
पहुँच मंजिल पर उन राहों को भुलाते कैसे !!

उम्र भर प्यास खरीदी है सर उठा कर हमने
झूठी बूंदों की तरफ सर को झुकाते कैसे !!

ज़िन्दगी मुड़ के नहीं देखती गुज़रे मक़ामों की तरफ
मगर पिछले ख़यालो से हम खुद को छुड़ाते कैसे !!

छोटी-छोटी खुशियों की न होती कोई कीमत तो
बोझ ज़िन्दगी का हम काँधों पर उठाते कैसे ?

वह जो थे ठंडी रातों की तड़प से वाक़िफ़
अपने हाथों से जली लौ को बुझाते कैसे ?

होश आया क्या हुआ

मिटे है हम तो सिर्फ तुम्हारे वास्ते
दोस्ती को दुश्मनी भी कह दिया तो क्या हुआ !!

दूर से देख के झिलमिल चल पड़े तुम उस तरफ
आग दामन में लगाई तो दिवाने क्या हुआ !!

जमाना गुजरा खबर अपनी हमे पाए हुए
तुम पूछते हो इस अरसे में हाल हमारा क्या हुआ !!

मयखुदी में बेच आये तुम तो अपनी ही रूह
छोड़ चला प्याला भी तब होश आया क्या हुआ !!

तसववुर

यही एहसास बहुत है रूहे तस्कीन के लिए
मेरी कब्र पर दो घड़ी वो आँसू बहाने आये थे !!

पहचानी राहों पर मिले अन्गिनत बेगाने दोस्त
किस उम्मीद से हम फिर अपनी दुनिया बसाने आये थे !!

फिर चोट उभर आई है तुम्हारे तसववुर के साथ
यूँ तो हम तुम्हारे तराशे ज़ख्म मिटाने आये थे !!

सिमट आई अपने दामन में सारी ही तारीकियाँ
.खैर आप तो महफ़िल में शमा ही जलाने आये थे !!

मुड़ के अब तो देखते नहीं राहे मोहब्बत पर कभी
वह जो नादानी में हमको आजमाने आये थे !!

आपकी सिर्फ़ एक नज़र , सिर्फ़ एक नज़र के वास्ते
छत पर अक्सर हम यूँ ही धूप के बहाने आये थे !!

बात बन जाये

जो अपने हाथों से पिला दो, तो बात बन जाये
बहकाना मुझको भी सिखा दो, तो बात बन जाये !!

मेरी दुआएँ यूँ तुमसे ही वाबसता हैं मगर
तुम जो हाथ अपने उठा दो, तो बात बन जाये !!

इस अँधेरे में बढ गई हैं मेरी मायूसियाँ बहुत
जुल्फ चेहरे से हटा दो, तो बात बन जाये !!

मेरे गुलज़ार में नहीं यूँ नज़ारों की कमी
तुम जो रंग थोड़ा उड़ा दो, तो बात बन जाये !!

ठहरे पानी में अक्स-ऐ-शम्स देखने वालों
आग पानी में लगा दो , तो बात बन जाये !!

दीवानगी

एक ज़ख्म-ए-मोहब्बत है और तन्ज़ जमाने के
में जो जिंदा हूँ तो क्या यह एहसास-ए-बेहिशी है !!

जो कदम मिला रहे हो, अरे साथ क्या चलोगे
इन राहों के दामनों में काँटे हैं, तिशनगी है !!

रह गयी हैं मुझसे जो मेरी परछाईयाँ लिपटकर
मेरे दिल में अबतक वह पहली सी सादगी है !!

इंकार किया जो तमने मुझको पहचानने से
क्या आईना धुँधला है या नज़रों की बेबसी है !!

क्यों मुस्कुरा रही हो 'सबा' खुद को मिटा मिटा के
दीवानगी है या क्या या आलम-ए-आशिकी है !!

साथ जमाना होता

काश दस्तूर-ऐ-वफ़ा हमको न निभाना होता
छूट जाता कोई ग़म जो पुराना होता !!

भूल ही जाते अपनी तबाही का सबब हम
ज़िन्दगी हाथ तेरे फिर जो न आना होता !!

ज़िफ़्र उसका हुआ चलो कोई बात नहीं
मुझे रोना था कुछ तो बहाना होता !!

ज़िन्दगी बनी है उसकी ही तिनके की मानिंद
जिसके शाने तक कई हाथो को आना होता !!

कर तो जाते हम तुम्हारी बज़्म को रौशन
चाहे हँस कर हमको भी जल जाना होता !!

पूछने आते हम तुम्हारी मौत का आलम
अपनी साँसो का गर कोई ठिकाना होता !!

आजिज़ करती है बहुत तेरे दामन की तलाश मुझे
जब भी कुछ खुद से कुछ जमाने से छुपाना होता !!

तुम भी कहते बड़े काम का इंसान हूँ मैं
जो इस हाल में मुझे तुमने न जाना होता !!

यूँ न कर मेरे जीने की तू हर घड़ी दुआएँ
मैं न होता तो तेरे साथ जमाना होता !!

गैर बन जाने में वख्त ही कहाँ लगता है 'सबा'
बस एक कदम तमको और एक हमको हटाना होता !!

रास्ता कहाँ मिला

जो कुर्बतें यहाँ बोझ थीं तो दूर जाके क्या मिला !!
ज़िन्दगी से था गिला तो दिल जला के क्या मिला !!

माना की मुश्किल था बहुत हकीकतों का सामना
ख्वाबों के दामन में मगर मुह छुपा के क्या मिला !!

तुझे कदमों पे न था यक्री न हौसलों की पहचान थी
तुझे मिल गई जो मंजिलें पर रास्ता कहाँ मिला !!

एक फूल ने कहा बुत से खुदाई पर गुमाँ न कर
मिली सोने की सेज तुझे मगर गुलसिता कहाँ मिला !!

टूटा सितारा है

तुझे लूटा तेरे उसूलों ने ,
मुझे बेहिंसी ने मारा है !!
मैं सजाऊँ चाँदनी को कहाँ ,
मेरा आँगन टूटा सितारा है !!

अपने अरमान की सलीबों से
घर जिसका तुम सजाए रहती हो !!
कहता फिरता हैं तमको दीवाना,
वह वही तो है जो तुम्हारा है !!

लोग इस शहर से वाकिफ हैं
हाल-ए-दिल को छुपाये रखते हैं !!
अपने तो सर रखे हैं काँधो पर,
वह कोई अजनबी बेचारा है !!

आज की रात ये तवील होगी,
शम्स निकलेगा तो मगरिब से !!
क्रयामत न हो तो क्यों न हो,
आज उस शख्स ने पुकारा है !!

लकीरें

ऐ ज़िन्दगी तू इस कदर पशेमान न हो
मैंने कशती खुद डुबाई है हैरान न हो !!

मेरी रूह से मेरी पहचान करने वाला
वह घर से मेरे निकला जैसे पहचान न हो !!

अपने हाथों की लकीरों को मिटाया मैंने
तेरी रुस्वाई का इनमे कहीं सामान न हो !!

तेरी रहें मेरी राहों से मुख्तलिफ़ हैं बहुत
फिर मुम्किन है तेरी किसमत में तूफ़ान न हो !!

सौगात

दिल में वह जाने अपने क्या बात लेकर आते
दामन में जैसे कोई कायनात लेकर आते !!

महफ़िल में मशहूर हैं जो एक बहुत ख़ामोशियों का
नयनो में वो ही अक्सर बरसात लेकर आते !!

तुम तक जो जाती हैं वह राहें हैं पत्थरों की
चुपकेसे हम फिर कैसे जज़बात लेकर आते !!

मैं भी तो ढूँढती हूँ कोनों में रेशनी को
तारे जब भी अपनी बारात लेकर आते !!

तुम्हारी चाहतों पर यूँ मुझको यकी बहुत है
रूबरू कभी तो तुमको हालात लेकर आते !!

अपने होटों पर है तबस्सुम और नज़रे तुम्हारी जानिब
इससे बड़ी फिर और क्या सौगात लेकर आते !!

वो क्यों है

सब कुछ है मिला ,
फिर और की हसरत क्यों है !!
खुदा के लिए वख्त नहीं,
सब के लिए फुरसत क्यों है !!

जो सिखाती है मतलब
जीत का तमको
उस हार से फिर इतनी
नफरत क्यों है !!

पलकों के झूने से
बिखर जाते हैं टूट कर
हसीं ख्वाबों में इतनी
नज़ाकत क्यों है !!

ज़माना गुज़र गया कब का
रूह को ठंडा हुए
मेरी साँसों में बेवजह की
यह हसरत क्यों है !!

मक़ाम

महफ़िल इश्क में चलो अपना नाम तो आया
मय मिली न मिली खाली ज़ाम तो आया !!

क्या मिला हैं न पूछो मोहब्बत के खेल में
अपनों से जब आया जफ़ा का इनाम आया !!

दरे यार की मिटटी न डालो मज़ार पर
बाद मौत के रूह का बस यही पैग़ाम आया !!

दिए जलाये बैठे रहे हम इंतज़ार में
वह न आये खुद न कोई पैग़ाम आया !!

जहाँ दोस्तों के पास 'सबा' दोस्ती का वख़्त नहीं
अपनी राहें ज़िन्दगी में ऐसा मक़ाम भी आया !!

लाखों रंग

रंगोली सा मौसम है बिखरे हैं लाखों रंग
रसमों के , मोहब्बत के , बरकत के लाखों रंग !!

बहुत करीब है मेरे मगर अब मिल भी जाए मुझको
दिये हैं उसने यूँ तो रहमत के लाखों रंग !!

आज रूठा हूँ खुदा से अरे यह मेरा मामला है
क्या जानों तुम होते हैं कुर्बत के लाखों रंग !!

था एक तमाचा सा वह जो रूह तक उतर गया
उस पल में दे गया वह हकीकत के लाखों रंग !!

वह एक चुटकी से जो उसने मेरी माँग में भरा था
जिन्दगी में भर गया वह मोहब्बत के लाखों रंग !!

उसने देदी जो अपनी चादर 'सबा' तुमको मुराक़बे में
क्या क्या दिखा गए फिर इस इनायत के लाखों रंग !!

दुआओं की होली

इस रौशनी में खो जायें तम्हारे दर्द ओ परेशानी
सब साल जिन्दगी के बस हो जायें नूरानी !!

मैंने तो ओढ़ ली है यह चादर मोहब्बतों की
भूल जाओ तुम भी अपनी शिकायतें पुरानी !!

‘सबा’ की दुआ है भीगो तुम दुआओं की होली में
दिवाली की तरह हो रौशन हर साल जिन्दगानी !!

वह कोई और था

ठहरा हुआ सम्भला हुआ वह शक्स कोई और था
वह जो मिला कल दो लम्हा वह शक्स कोई और था !!

महफिल में जाम थे मगर जमीं को तो होश था
वह जो कदम उड़ा गया वह रक्स कोई और था !!

मुझे धुंद की वहम की पहचान थी बहुत मगर
वह जो डुबा गया मुझे वह अक्स कोई और था !!

दर्द-ए-आलम में पड़ा बेतर्तीब साँसों से भरा
वह जो माफ कर गया तुझे वह बक्स कोई और था !!

‘सबा’ ने यूँ तो हैं किये राहों की अपनी फैसले
वह जो जिन्दगी घुमा गया वह नक्श कोई और था !!